नई सोच, नया आयाम

जोहार छत्तीसगढ़

RNI No. CHHHIN/2009/35020

दैनिक हिन्दी

◆ वर्ष: -14 ◆ अंक: 224 डाक पंजीयन 030/रायगढ़/2015-2017 ◆ मूल्य: 2 ₹ ◆ पृष्ठ : 4

धरमजयगढ़, गुरुवार 23 जून 2022

JOHAR CHHATTISGARH epaper for login www.joharchhattisgarh.in

पेज -3 पर

निहारिका श्रीवास्तव को पत्रकार कल्याण महासंघ में मिली ...

राज्य महिला आयोग ने सुनवाई के दौरान महिलाओं के मानव तस्करी रोकथाम

पेज -4 पर

एक नजर

सीजी में पहली बार होगा प्रोफेशनल बॉक्सिंग इवेंट

रायपुर। रायपुर में रंबल इन द जंगल नाम का बॉक्सिकंग इवेंट होने जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार के सहयोग से होने वाले इस इवेंट में बॉक्सिंग रिंग में देश के अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर मुक्केबाज और ओलंपिक पदक विजेता विजेंदर सिंह बॉक्सिंग करते दिखेंगे। प्रदेश में यह इस तरह का बिल्कुल पहला इवेंट होगा।

विजेंदर सिंह ने इस कार्यक्रम को लेकर कहा कि 'मैंने इस कार्यक्रम को लेकर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से मुलाकात की थी। मैं अपना अगला पेशेवर मुकाबला आयोजित करने की सहमति देने के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का बहुत आभारी हूं। यह इवेंट छत्तीसगढ़ के लोगों को इस खेल से परिचित कराने का एक शानदार अवसर है। उम्मीद है कि इससे नई पीढ़ी के युवा मुक्केबाजों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।'' विजेंदर सिंह ने बताया कि वे वर्तमान में मैनचेस्टर में प्रशिक्षण ले रहे हैं और इस अगस्त में फिर से नई शुरूआत के लिए काफी उत्सुक हैं।

बिलासपुर-सरगुजा संभाग में भारी बारिश की चेतावनी:पूरे क्षेत्र में घने बादल

रायपुर। बिलासपुर-सरगुजा संभाग में बुधवार रात भारी बरसात की संभावना बन रही है। मौसम विभाग ने यहां आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका जताई है। गुरुवार को भी कुछ स्थानों पर मध्यम से भारी बरसात की संभावना जताई जा रही है।

मौसम विभाग ने बुधवार शाम बताया, उत्तर छत्तीसगढ़ में घने बादल छाए हुए हैं। इन बादलों से प्रदेश में एक-दो स्थानों पर भारी वर्षा होने तथा आकाशीय बिजली गिरने की संभावना है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक एक पूर्व-पश्चिम द्रोणिका उत्तर-पश्चिम राजस्थान से उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी तक 0.9 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। एक ऊपरी हवा का चक्रीय चक्रवाती

घेरा झारखंड और उससे लगे ओडिशा के ऊपर 1.5 किलोमीटर से 5.8 किलोमीटर ऊंचाई तक विस्तारित है। इसकी वजह से प्रदेश में 23 जून को भी अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने अथवा गरज-चमक के साथ सीटें पड़ने की संभावना है। प्रदेश में एक-दो स्थानों पर भारी वर्षा और वज्रपात की भी संभावना बन रही है।

बुधवार को कम बरसात हुई है

छत्तीसगढ़ में बुधवार को अपेक्षाकृत कम बरसात हुई है। कई इलाकों में सुबह से दोपहर तक धूप खिली रही। उसके बाद बादल फिर छाये। जशपुर, उदयपुर, ओड़गी, सोनहत, भैयाथान, सुकमा जैसे कुछ स्थानों पर दो से चार सेंटीमीटर तक की बरसात हुई है। वहीं जगदलपुर में 8.7 मिमी बरसात रिकॉर्ड हुई है। रायपुर के बाहरी क्षेत्रों, बिलासपुर, पेण्ड्रा रोड में भी हल्की बरसात दर्ज हुई है।

सात दिन से सक्रिय है मानसून

छत्तीसगढ़ में दक्षिण-पश्चिम मानसून का आधिकारिक आगमन 16 जून को हुआ। इससे पहले 15 जून की रात में ही यह बस्तर से प्रदेश में प्रवेश कर चुका था। 16 जून की दोपहर बाद मौसम विभाग ने आधिकारिक तौर पर बताया कि मानसून दुर्ग तक पहुंच गया है। 19 जून की सुबह 8बजे तक वह दुर्ग में ही अटका रहा था। दोपहर बाद उसकी रेंज पेण्ड्रा रोड तक पहुंच गई थी। 20 जून को दोपहर बाद तक मानसून प्रदेश के प्रत्येक जिले के ऊपर सक्रिय हो चुका था। मौसम विज्ञानियों का अनुमान है कि प्रदेश के आसमान पर छाए बादल अभी डटे रहेंगे।

फिर जंतर-मंतर पर कांग्रेस

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा, भाजपा को केवल कांग्रेस और राहुल गांधी से खतरा

रायपुर। पार्टी मुख्यालय में आंदोलन की रूपरेखा तय करने के बाद कांग्रेस फिर जंतर-मंतर पर पहुंच गई है। वहां संगठन सेना भर्ती की अग्निपथ योजना के विरोध में चार दिन से धरना दे रही है। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की मौजूदगी में धरने को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा, भाजपा को केवल कांग्रेस और राहुल गांधी से खतरा, इसलिए वह राहुल गांधी और कांग्रेस की आवाज दबाना चाहती है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा केंद्र सरकार नौजवानों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। भाजपा देश में आरक्षण और नौकरी खत्म कर देना चाहती है। इसके साथ ही उन्होंने ईडी की कार्रवाई पर राहुल गांधी को प्रताड़ित करने का आरोप लगाया।भूपेश बघेल ने कहा कि युवा देश में बनी स्थिति देख रहे हैं। केंद्र की सरकार कांग्रेस से डरी हुई है। कार्यकर्ताओं को अपने ही कार्यालय जाने से रोका जा रहा है। उन्होंने कहा, भाजपा को खतरा सिर्फ कांग्रेस और राहुल गांधी से है। राहुल गांधी ही किसानों, नौजवानों, दलितों की लड़ाई लड़ते हैं, इसीलिए उनकी आवाज को केंद्र की भाजपा सरकार दबाना चाहती है। उन्होंने कहा छत्तीसगढ़ की कांग्रेस पार्टी और वहां की जनता राहुल गांधी के साथ खड़ी है।

कांग्रेस मुख्यालय में बनी आंदोलन की रूपरेखा

प्रवर्तन निदेशालय-श्वष्ट में राहुल गांधी से पांच दिनों की पूछताछ हो चुकी है। एजेंसी ने अब गुरुवार को कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी को पूछताछ के लिए बुलाया है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने कांग्रेस मुख्यालय में एक बैठक की। इसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदम्बरम,प्रमोद तिवारी, अधीर रंजन चौधरी, विधायक विकास उपाध्याय, अरुण वोरा, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम सहित छत्तीसगढ़ कांग्रेस के लगभग सभी विधायक मौजूद थे।

केंद्र सरकार पर एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप

बैठक में नेताओं ने कहा कि केंद्र सरकार सरकारी एजेंसियों का इस्तेमाल कर विपक्ष को कुचलना चाहती है। इसके लिए वह अलोकतांत्रिक प्रक्रिया भी अपना रही है। ऐसे समय में कांग्रेस नेताओं-कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी बढ़ रही है। केंद्र सरकार की नीतियों के खिलाफ लड़ाई कैसे लड़ी जाए इसपर मंथन जारी है। बैठक में सोनिया गांधी से श्वष्ट की पूछताछ के विरोध में आंदोलन के रूपरेखा पर भी चर्चा हुई।

छत्तीसगढ़ सदन में मंत्री को दी जन्मदिन की बधाई

छत्तीसगढ़ सदन से कांग्रेस मुख्यालय रवाना होने से पहले मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने खाद्य मंत्री अमरजीत भगत को जन्मदिन की बधाई दी। भगत का जन्मदिन है और वे पार्टी के बुलावे पर दिल्ली पहुंचे हुए हैं।

7 साल के बच्चे ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड, किया ये कारनामा

जगदलपुर। कभी बस्तर को नक्सली खौफ के लिए जाना जाता था, लेकिन आज जिले के लाल दुनिया में अपनी काबिलियत साबित कर रहे हैं। बस्तर के 7 साल के एक बच्चे ने जूनियर रूबिक क्यूब पजल में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। बस्तर का वैश्वत जोशी, जिसकी उम्र महज 7 साल है, लेकिन इस छोटी सी उम्र में इस बच्चे ने बड़ा कारनामा कर दिखाया है। इसके कारनामे को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। वैश्वत ने जूनियर रूबिक क्यूब पजल को 15 मिनट में सॉल्व कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। जिसके लिए उसे मेडल और सर्टिफिकेट से नवाजा गया। कोरोनाकाल में वैश्वत को रूबिक क्यूब पजल में दिलचस्पी जागी थी। वहीं, परिजनों को 22 फरवरी को विश्वभर के जूनियर रूबिक क्यूब हल करने वालों की प्रतियोगिता की जानकारी मिली। इसके बाद इस स्पर्धा में वैश्वत का नाम दर्ज करवाया गया। जिसमें दुनियाभर के करीब 250 से अधिक बच्चों के बीच ऑनलाइन मुकाबला हुआ, और इसे साल्व करने के लिए 1 घंटे का समय दिया गया था, पर वैश्वत ने सिर्फ 15 मिनट में ही इसे सॉल्व कर विश्व रिकॉर्ड बना दिया।

पूर्व मंत्री अजय चंद्राकर का सीएम भूपेश पर तंज

मुख्यमंत्री जी जल्दी छत्तीसगढ़ आइये, आपको कोई कुछ नहीं कहेगा-अजय चन्द्राकर

रायपुर। नेशनल हेराल्ड केस में कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद राहुल गांधी से 5 दिनों में करीब 40 घंटे से ज्यादा पूछताछ की जा चुकी है। प्रवर्तन निदेशालय (ED) द्वारा पूछताछ के लिए लगातार बुलाए जाने पर देशभर के कांग्रेसी उद्वेलित हैं। देश की राजधानी दिल्ली में कांग्रेस के नेताओं को जमावड़ा है।

इधर छत्तीसगढ़ के पूर्व मंत्री अजय चंद्राकर ने भूपेश सरकार पर हमला बोला। अपने ट्विटर एकाउंट पर एक के बाद एक 3 मामलों में ट्वीट कर कहा कि राहुल गांधी जी (भावी अध्यक्ष कांग्रेस) आपके निर्देश पर

छत्तीसगढ़ कांग्रेस की पारिवारिक स्वामी भक्ति के सामने संविधान नतमस्तक हो गई और चुनी हुई सरकार सड़क छाप हो गई। ये छत्तीसगढ़ के लोगों के जनादेश का अपमान है। विधायक अजय चंद्राकर ने दूसरे ट्वीट में कहा कि छत्तीसगढ़ के प्रिय किसान बंधुओं... खाद की कालाबाजारी, सरकार का प्रिय धंधा है...। फिर भी आप लोगों को शिकायत करनी है तो छत्तीसगढ़ सरकार का पता- जंतर-मंतर दिल्ली है। छत्तीसगढ़ से सरकार लापता है। तीसरे ट्वीट में चंद्राकर ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री जी, आप जहां कहीं भी हो जल्दी छत्तीसगढ़ आइये... कोई आपको कुछ नहीं कहेगा। लेकिन आप दिल्ली से ही लाइव देखिए... छत्तीसगढ़ के लोग अवसादग्रस्त होकर कैसे मर रहे हैं...। नर्क बन गया छत्तीसगढ़... भगवान ही मालिक है। अजय चंद्राकर ने अपना ट्वीट भाजपा की छत्तीसगढ़ प्रभारी डी पुरंदेश्वरी, सह प्रभारी बीएल संतोष, कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी पीएल पुनिया और सीएम भूपेश बघेल को भी टैग किया है।

कलेक्टर रायपुर से भेंट कर तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ ने सौपा ज्ञापन

रायपुर । छ.ग.तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ ने कृषि विभाग के उप संचालक कृषि रायपुर द्वारा रायपुर जिले के चारों विकास खंडो अभनपुर, धरसींवा, तिल्दा, आरंग के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियो के अनावश्यक तुगलकी फरमान जारी कर नोटिस दिए जाने का विरोध किया है। छत्तीसगढ़ तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ के प्रांताध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी के नेतृत्व में संघ का प्रतिनिधि मंडल कलेक्टर रायपुर सौरभ कुमार से मुलाक़ात कर ज्ञापन सौंपा । डीडीए रायपुर द्वारा वर्मी कम्पोस्ट एवं सुपर कम्पोस्ट के मात्रा में कमी पर जिले में कार्यरत ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों को गोधन न्याय योजना अंतर्गत कार्य में अनावश्यक रूप से तुगलकी फरमान जारी करते स्पष्टीकरण तथा वेतन कटौती का नोटिस दिया गया है जिसका संघ विरोध करता है।

80 लाख कैश के साथ 2 युवक गिरफ्तार

कार में चैंबर बनाकर छिपाया था पैसा; गुजरात के रहने वाले हैं आरोपी

कोंडागांव। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले में पुलिस ने वाहनों की चेकिंग के दौरान एक कार से 80 लाख रुपए बरामद किए हैं। आरोपी कार की पिछली सीट के नीचे एक चैंबर बनाकर रखे थे और इसी चैंबर में एक प्लास्टिक की बोरी में 80 लाख रुपए नगद छिपाए हुए थे। जिस कार से इतनी बड़ी रकम बरामद की गई है, उसका नंबर उत्तर प्रदेश का है। वहीं पुलिस ने गुजरात के 2 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आशंका जताई है कि ये पैसे चोरी के हैं। फिलहाल इन आरोपियों से पूछताछ जारी है। मामला फरसगांव थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, बुधवार को कोंडागांव जिले के फरसगांव में जवान चेक पोस्ट लगाकर आने-जाने वाली वाहनों की चेकिंग कर रहे थे। इसी बीच कोंडागांव जिला मुख्यालय की

तरफ से उत्तर प्रदेश पासिंग नंबर की एक कार आई। जिसे जवानों ने रुकवाया। कार की तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान पीछे की सीट के नीचे पुलिस को एक चैंबर दिखा, जिसे खोलने पर अंदर एक प्लास्टिक की बोरी रखी मिली। जवानों ने जब बोरी को निकाकर देखा तो उसमें 500 की कई गड्डियां मिली। पुलिस ने पैसे गिने तो कुल 80 लाख रुपए निकले।

जिसके तुरंत बाद जवानों ने कार में सवार दो युवकों को पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया। एक ने अपना नाम भार्गव पटेल (27) और दूसरे ने जयस कुमार भोलाभाई (28) बताया। ये दोनों युवक गुजरात के रहने वाले हैं। पौसों के बारे में जब पुछताछ की गई। दोनों ये पैसे कहां से लाएं हैं इसका कोई प्रमाण या कोई वैध दस्तावेज पुलिस को नहीं दिखाए। स्क दिव्यांग पटेल ने बताया कि, पुलिस ने पैसे चोरी के होने का संदेह किया और दोनों को गिरफ्तार कर लिया है। जिन्हें न्यायालय में पेश कर जेल भेजा गया।

हरियाली प्रसार योजना

तीन वर्षों में 83 लाख से अधिक पौधों का रोपण

रायपुर । वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा संचालित ''हरियाली प्रसार'' योजना के अंतर्गत तीन वर्षों वर्षा ऋतु 2019, 2020 तथा 2021 में 83 लाख 31 हजार पौधों का रोपण किया गया है। इससे 07 हजार 400 हेक्टेयर रकबा हरियाली से आच्छादित हुआ है। इसमें हितग्राहियों तथा कृषकों की ओर से पौधों की बढ़ती मांग को देखते हुए वृद्धि कर वर्ष 2022-23 में इस योजना के अंतर्गत वनेत्तर क्षेत्रों में कृषकों की भूमि पर रोपण के लिए बजट में 17 करोड़ 58 लाख रूपए की राशि का प्रावधान किया गया है।

वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री मोहम्मद अकबर ने बताया कि ''हरियाली प्रसार'' योजना पर्यावरण सुधार सहित पड़त भूमि के विकास तथा लोगों की आय में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है।

अभियान... छत्तीसगढ़ में अब 'नरवा मिशन'

वन और ग्रामीण विकास विभाग मिलकर चलाएंगे अभियान, नालों को पुनर्जीवित करने की जिम्मेदारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ में बरसाती नालों (नरवा) को पुनर्जीवित करने और उसमें 12 महीने पानी भरा रखने की कोशिश में नरवा मिशन का गठन किया है। अभी तक पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग और वन विभाग इस काम को अलग-अलग कर रहे थे।

यह मिशन इन दोनों विभागों के बीच काम का समन्वय बनाएगा। मुख्यमंत्री सचिवालय और वन विभाग के अपर मुख्य सचिव सुब्रत साहू को इस मिशन का अध्यक्ष बनाया गया है। अधिकारियों ने बताया, नरवा विकास कार्यक्रम के तहत प्रदेश के लगभग 30 हजार नालों को रिचार्ज करने के लिए चयनित किया गया है। इसके पहले चरण में 9 हजार 541 नालों के उपचार की स्वीकृति दी गई है। नालों का उपचार करने के लिए नरवा विकास कार्यक्रम के तहत नालों में वर्षा के जल को रोकने हेतु लूज बोल्डर चेक, चेकडेम, गली प्लग, कंटूर ट्रेंच, स्टाप डेम जैसी अलग-अलग संरचनाओं का निर्माण किया जाना है। बताया जा रहा है, इस कार्यक्रम से छत्तीसगढ़ में सिंचित क्षेत्र बढ़ेगा और अधिकांश जगह कृषि के लिए जल उपलब्ध होगा। निस्तार के लिए भी पानी की कमी की समस्या काफी हद तक दूर हो सकेगी। साथ ही जैव विविधता को भी बचाया जा सकेगा। अधिकारियों का कहना है कि पहले उपचारित नालों में अब गर्मी के दिनों में भी पानी रहता है। इससे निस्तार, पेयजल और सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता बढ़ी है और क्षेत्र में भू-जल स्तर में भी बढ़ोत्तरी हो रही है।

बीएसपी में यूनियन मान्यता चुनाव को मंजूरी

श्रम आयुक्त की बैठक में होगा तारीख का ऐलान, 14 हजार कर्मी डालेंगे वोट

रायपुर। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) की सबसे बड़ी इकाई भिलाई इस्पात संयंत्र (बीएसपी) में जल्द ही यूनियन की मान्यता को लेकर चुनाव होंगे। केंद्रीय श्रम मंत्रालय ने चुनाव को हरी झंडी दे दी है। केंद्रीय श्रम आयुक्त ने रायपुर में भिलाई इस्पात संयंत्र के अफसरों की 23 जून को एक बैठक बुलाई है, जिसमें चुनाव की तारीख घोषित की जाएगी। बैठक में सभी मान्यता प्राप्त कर्मचारी यूनियनों को भी बुलाया गया है। बैठक में ही निर्वाचन अधिकारी की घोषणा कर दी जाएगी। भिलाई इस्पात संयंत्र एशिया महाद्वीप का सबसे

कारखाना है, जिसे 11 बार प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री ट्राफी से नवाजा जा चुका है।

भिलाई इस्पात संयंत्र में 14 हजार से अधिक कर्मचारियों का नेतृत्व करने वाली यूनियन का चुनाव होना है। कर्मियों द्वारा चुनी गई यूनियन की मान्यता दो साल की होती है। पिछला चुनाव जीतने के बाद इंटक को यह मान्यता मिली थी, जिसका कार्यकाल अक्टूबर 2021 को समाप्त हो चुका है। मान्यता प्राप्त यूनियन चुनाव के लिए केंद्रीय श्रम अधिनियम 1948 के तहत प्रक्रिया शुरू की गई। निष्पक्ष चुनाव को लेकर भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन और यूनियनों की कई बैठकें हो चुकी है।

विदेशों में क्यों धन जमा करते हैं भारतीय, इसकी वजह और शेल कंपनियों का सच

ह्यहाल में खबर आई है कि स्विस बैंकों में भारतीयों के जमा धन में भारी इजाफा हुआ है। वर्ष 2021 में भारत के लोगों और संस्थाओं की स्विस बैंकों में कुल जमा राशि 30,500 करोड़ रुपये थी। यह 14 साल के उच्च स्तर पर है। स्विस बैंकों ने यह जो जानकारी दी है, वह वैध धन है, काला धन नहीं। विदेशों में या स्विस बैंक में भारतीयों का कितना काला धन जमा है, इसका पता लगाना टेढ़ी खीर है।

अपने देश से जिस माध्यम से काला धन विदेशों में जाता है, उसे हम लेयरिंग कहते हैं। लेयरिंग में लोग देश से काला धन हवाला, आयात या निर्यात में अंडर इनवॉयसिंग तथा ओवर इनवॉयसिंग के जरिये किसी टैक्स हेवन देश में किसी शेल कंपनी में डाल देते हैं। फिर वहां उस शेल कंपनी को बंद करके किसी दूसरे टैक्स हेवन देश में नई शेल कंपनी बनाकर उसमें पैसा लगा देते हैं।

इस तरह से छह चरणों में पैसे निकालते, डालते हुए अंत में स्विट्जरलैंड भेजते हैं। ऐसे में छह स्तर होने पर छह शेल कंपनियां बनती और बंद होती हैं, जिसका पता लगाना बहुत मुश्किल होता है। सरकार अगर चाहे भी तो एकाध स्तर तक ही पता लगा पाती है, उससे आगे पता नहीं लग पाता है। लेयरिंग की इस प्रक्रिया में जहां से आखिरी बार स्विट्जरलैंड में पैसा जाता है, स्विट्जरलैंड सरकार उसे उस देश का पैसा मान लेती है।

जैसे कि जर्सी आइलैंड से पैसा स्विट्जरलैंड गया है, तो वह मान लेगी कि यह पैसा ब्रिटिश है, भारतीय नहीं है, क्योंकि जर्सी आइलैंड ब्रिटेन का है। इसलिए उसे भारतीय धन में नहीं गिना जाता है। स्विट्जरलैंड के बैंकों में जो पैसा है, वह सबसे ज्यादा (30 लाख 62 हजार करोड़ रुपये) ब्रिटिश पैसा है, क्योंकि ब्रिटेन के पास सबसे ज्यादा टैक्स हेवन हैं। इसलिए स्विट्जलैंड की सरकार कहती है कि हमारे यहां सबसे ज्यादा पैसा ब्रिटेन से आया है।

जबकि सबसे ज्यादा काला धन रूस, यूक्रेन, भारत आदि देशों में पैदा होता है। वास्तव में जो वैध धन होता है, स्विस बैंक उसकी ही गिनती बताते हैं। सरकार अगर चाहे भी, तो वह पैसा वापस नहीं ला सकती, क्योंकि आयातकों और निर्यातकों पर सरकार का उतना दबाव नहीं होता कि वैध धन को विदेशों से देश में लाया जाए।

देश में जितना काला धन पैदा होता है, उसका दस प्रतिशत बाहर जाता है, बाकी 90 प्रतिशत काला धन देश में ही रहता है। इसलिए अगर हमें काले धन पर अंकुश लगाना है, तो देश में ही उस पर लगाम लगानी चाहिए। अगर बाहर भेजे गए काले धन को पकड़ना चाहेंगे, तो उसमें विफलता ही मिलेगी, क्योंकि सरकार को भी ठीक-ठीक पता नहीं कि कितना काला धन बाहर गया है और उसे कहां रखा गया है।

अगर यह काला धन नहीं है, तो फिर भारत के लोग स्विस बैंकों में पैसा क्यों जमा करते हैं? इसकी कई वजहें हैं। जब भी अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता की स्थिति पैदा होती है, तो लोग अपने धन को डायवर्सिफाइ (अलग-अलग जगहों पर जमा करना) करते हैं, इससे उनका जोखिम कम हो जाता है। जैसे कि मान लीजिए कि इस बात का खतरा है कि रुपया गिरेगा, तो वे अपना धन फॉरेन एक्सचेंज के माध्यम से स्विस बैंकों में जमा कर देंगे। जो निर्यातक हैं, वे अपना पैसा देर से लाएंगे, जब अर्थव्यवस्था में स्थिरता आएगी और रुपये के गिरने का खतरा कम हो जाएगा।

और जो आयात करने वाले हैं, वे अपना पैसा इसलिए विदेशी बैंकों में जमा रखते हैं, क्योंकि उन्हें आयात बिल भरना होता है। अन्यथा रुपये का मूल्य गिरने पर उन्हें भारी घाटा होगा। इस तरह से आयातक और निर्यातक यह अनुमान लगाकर कि रुपया कमजोर होने पर हमें घाटा हो सकता है, अपना वैध पैसा विदेशी बैंकों में जमा करते हैं। इसके अलावा रिजर्व बैंक की लिबरलाइज्ड रेमिटेंस स्कीम (एलआरएस) है, जिसके तहत कोई भी हर साल ढाई लाख डॉलर देश के बाहर ले जा सकता है।

उसके चलते भी बहुत से लोग अपना वैध धन स्विस बैंकों में या कहीं और जमा करते हैं। स्विस बैंकों में भारतीयों की जमा राशि बढ़ने का संकेत यह है कि लोगों को लग रहा है कि अर्थव्यवस्था की स्थिति थोड़ी कमजोर हो रही है। इस बीच, एक और बात हुई है, हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल्स (एचएनडब्ल्यूआई) देश छोड़कर जा रहे हैं। एक रिपोर्ट आई थी कि वर्ष 2014 से 2017 के बीच में देश से 23,000 हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल्स देश छोड़कर विदेश चले गए। वर्ष 2018 में पांच हजार एचएनडब्ल्यूआई देश छोड़कर चले गए। सुनने में यह भी आ रहा है कि बीते एक साल में नौ हजार एचएनडब्ल्यूआई देश छोड़कर चले गए हैं। जाहिर है, जब वे बाहर रहेंगे, तो अपनी संपत्ति का एक हिस्सा बाहर ही रखेंगे। अभी देश का जो माहौल है, उसमें कई अति समृद्ध लोगों को यह भय है कि पता नहीं कब सरकार कौन-सा दबाव बनाए या सख्ती करे, इसलिए वे देश छोड़कर विदेशों में बसने जा रहे हैं। अपने सामाजिक माहौल और निवेश माहौल में जो अनिश्चितता का दौर चल रहा है, उसके कारण भी हो सकता है कि लोगों ने अपना और ज्यादा वैध धन स्विस बैंकों में जमा किया हो। दो तरीके से देश से विदेशों में पैसा जाता है। एक तो वैध तरीके से और दूसरा काले धन के रूप में।

अरुण कुमार

संपादकीय

वीडियो गेम्स की लत

वीडियो गेम खेलना धीरे-धीरे लत बन जाती है। उसके बाद संबंधित बच्चा खेल के बारे में नहीं सोचना चाहे, तब भी वह अपने-आप को रोकने में सक्षम नहीं होता। हिंसा से भरपूर वीडियो गेम्स खेलने वाले लोग निष्ठुर हो जाते हैं।

हाल की दो घटनाओं ने आम जन मानस को झकझोर रखा है। इन दोनों का संबंध मोबाइल गेम्स की बढ़ती लत से है। इनमें से एक घटना में 16 साल के एक लड़के पर अपनी ही मां की हत्या का आरोप लगा। बताया जाता है कि मां बेटे को मोबाइल गेम खेलने से मना करती थी। उधर दूसरी घटना में इसी वजह से बेटे ने खुदकुशी कर ली। इन घटनाओं ने मोबाइल्स गेम्स के कारण परिवारों में खड़ी समस्याओं को फिर से हमारे सामने ला दिया है। ऐसी मुश्किलों से दुनिया भर के मध्यवर्गीय परिवार जूझ रहे हैं। कुछ समय पहले ऑस्ट्रेलियाई नेशनल यूनिवर्सिटी में हुए शोध में इस बात के ठोस सबूत जुटाए गए थे कि वीडियो गेम खेलना धीरे-धीरे लत (एडिक्शन) बन जाती है। उसके बाद हाल यह हो जाता है कि संबंधित बच्चा खेल के बारे में नहीं भी सोचना चाहे तब भी वह अपने-आप को रोकने में सक्षम नहीं होता। कुछ दूसरे जानकारों का भी कहना है कि हिंसा से भरपूर वीडियो गेम्स खेलने वाले लोग निष्ठुर हो जाते हैं। उन्हें हिंसक चित्र देख कर कोई खास फर्क नहीं पड़ता। ऐसे लोग तनाव से मुक्ति पाने के लिए वीडियो गेम का सहारा लेते हैं और अपराध करने की जगह अपना गुस्सा ऑनलाइन या वीडियो गेम पर उतारने लगते हैं।

आम आदमी की आजीविका से अर्थव्यवस्था तक डिजिटल माध्यम से पहुंच बनाने की कोशिश

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने युवाओं, किसानों और उद्यमियों को कर्ज की सरल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 13 सरकारी योजनाओं से जुड़े क्रेडिट लिंक्ड पोर्टल जन समर्थ की शुरुआत की है। उन्होंने इस मौके पर कहा कि यह पोर्टल आम आदमी के जीवन को आसान बनाने में अहम भूमिका निभाएगा, वहीं युवाओं के लिए मनचाही कंपनी व उद्यम खोलने और चला पाने के काम को आसान बनाएगा।

उल्लेखनीय है कि कोविड-19 के बाद कल्याणकारी अर्थशास्त्री पूरी दुनिया में वैश्विक मंदी के चुनौतिपूर्ण दौर में गरीबी दूर करने और गरीबों के कल्याण के लिए वित्तीय समावेशन की प्रभावी आवश्यकता बता रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारत में हाल के वर्षों में वित्तीय समावेशन की डगर पर तेजी से बढ़ाए जा रहे कदमों की सराहना दुनिया के विभिन्न आर्थिक और वित्तीय संगठनों ने की है।

यह कहा जा रहा है कि भारत में करोड़ों गरीब, पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों को अर्थव्यवस्था के औपचारिक माध्यम में शामिल करके उन्हें डिजिटल माध्यम के जरिये पारदर्शी ढंग से वित्तीय और बैंकिंग सेवाओं की सरल उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने से आम आदमी तक सब्सिडी, वित्तीय सेवा, राशन, प्रशासनिक तथा स्वास्थ्य सेवाओं सहित कई बहुआयामी सुविधाएं बिना मध्यस्थों के पहुंच रही हैं।

आमजन और वित्तीय समावेशन

देश में डिजिटल बुनियादी ढांचा कमजोर है। डिजिटल लेन-देन की बुनियादी जरूरत-कंप्यूटर और इंटरनेट बड़ी संख्या में लोगों की पहुंच से दूर हैं। वित्तीय लेन-देन के लिए बड़ी संख्या में लोग डिजिटल भुगतान तकनीकों से अपरिचित हैं। छोटे गांवों में बिजली की पर्याप्त पहुंच नहीं है। साथ ही मोबाइल ब्रॉडबैंड स्पीड के मामले में भी देश अभी बहुत पीछे है।

दुनिया भर में यह भी रेखांकित हो रहा है कि भारत में आम आदमी और छोटे कारोबारियों को छोटी रकम के सरल कर्ज देकर उनके जीवन को आसान और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सूक्ष्म वित्त क्षेत्र का सकल ऋण पोर्टफोलियो (जीएलपी) तेजी से बढ़ रहा है। 16 जून को प्रकाशित माइक्रोफाइनेंस इंस्टीट्यूशंस नेटवर्क (एमएफआईएन) के नए आंकड़ों के मुताबिक, जीएलपी 31 मार्च, 2022 तक 10 प्रतिशत बढ़कर 2,85,441 करोड़ रुपये हो गया, जो 31 मार्च, 2021 तक 2,59,377 करोड़ रुपये था।

खास बात यह भी है कि सूक्ष्म वित्त उद्योग से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इसके तहत मार्च, 2022 में ऋण खाते बढ़कर 11.31 करोड़ हो गए, जो मार्च, 2021 में 10.83 करोड़ थे। इसमें कोई दो मत नहीं है कि जनधन योजना (पीएमजेडीवाई) ने देश में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। देश में लागू की गई विभिन्न वित्तीय समावेशन योजनाओं से देश का आम आदमी कितना लाभान्वित हो रहा है, इसका आभास भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) इकोरैप के द्वारा प्रकाशित भारत में वित्तीय समावेशन शोध रिपोर्ट, 2021 से लगाया जा सकता है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, भारत अब वित्तीय समावेशन के मामले में जर्मनी, चीन और दक्षिण अफ्रीका से आगे है।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जनधन योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग की तस्वीर बदल दी है। जिन राज्यों में प्रधानमंत्री जनधन योजना खातों की संख्या ज्यादा है, वहां अपराध में गिरावट देखने को मिली है। यह भी देखा गया है कि अधिक बैंक खाते वाले राज्यों में शराब और तंबाकू उत्पादों जैसे नशीले पदार्थों की खपत में महत्वपूर्ण एवं सार्थक गिरावट आई है। निस्संदेह देश के गरीब एवं कमजोर वर्ग के अधिकांश लोग वित्तीय समावेशन का लाभ लेने के लिए आगे बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। लेकिन वित्तीय समावेशन की डगर पर कई बाधा और चुनौतियां भी दिखाई दे रही हैं।

जयंतीलाल भंडारी

मिला जुला

अफगानिस्तान में भीषण भूकंप से 1000 लोगों की मौत

600 घायल, पाकिस्तान में भी बर्बादी

काबुल/इस्लामाबाद। अफगानिस्तान और पाकिस्तान में बुधवार अल सुबह आए भीषण भूकंप से भारी तबाही मची है। रिक्टर पैमाने पर 6.1 की तीव्रता वाले इस भूकंप से अफगानिस्तान में 1000 लोगों के मारे जाने की खबर है। वहीं 600 से ज्यादा लोग घायल हो गए हैं। सबसे ज्यादा प्रभावित पाकटीका और खोस्त इलाके हुए हैं। यहां कई गांव खंडहर में बदल गए हैं। पाकिस्तान में भी अफगानिस्तान से सटे कई इलाकों में बर्बादी हुई है। अमेरिकी जिओलॉजिकल सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक इस भूकंप का केंद्र दक्षिणी पूर्वी अफगानिस्तान के खोस्त शहर से 44 किमी दूर था।

अफगानिस्तान की न्यूज एजेंसी बख्तार ने इस भारी तबाही की सूचना दी है। एजेंसी ने बताया कि बचावकर्मी हेलिकॉप्टर से इलाके में पहुंच गए हैं। तालिबान सरकार के उप प्रवक्ता बिलाल करीमी ने कहा, 'पाकटीका प्रांत में 4 जिलों में भीषण भूकंप आया है। इसमें सैकड़ों की तादाद में लोग मारे गए हैं और दर्जनों घर तबाह हो गए हैं। हम सभी सहायता देने वाली एजेंसियों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने दल को इलाके में भेजें ताकि और ज्यादा विनाश से बचा जा सके।'

पाकिस्तान में कई घर तबाह, मौतें

अफगान मीडिया के मुताबिक खोस्त में भारी तबाही की तस्?वीरें सामने आ रही हैं। पाकिस्तान में भी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक व्यक्ति के मारे जाने की खबर है। बताया जा रहा है कि भूकंप से घर की छत गिर गई जिससे इस व्यक्ति की मौत हो गई। पाकिस्तानी समयानुसार सुबह 1.54 मिनट पर यह भूकंप आया था। पाकिस्तान में पेशावर, इस्लामाबाद, लाहौर और पंजाब तथा खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के अन्य हिस्सों और भारत तक इस जोरदार भूकंप के झटके महसूस किए गए। अफगान इलाकों से आ रही तस्वीरों में दिख रहा है कि भूकंप की वजह कई इलाके बर्बाद हो गए हैं। यूरोपीय भूकंप केंद्र का अनुमान है कि इसके झटके करीब 500 किलोमीटर के इलाके में महसूस किए गए। भूकंप के झटके बाद लोग दहशत में आ गए और सड़कों पर निकल आए। इससे पहले पिछले शुक्रवार को पाकिस्तान के कई शहरों में रिक्टर पैमाने पर 5 की तीव्रता वाला भूकंप आया था।

द्रौपदी मुर्मू के नाम पर विपक्ष में लगेगी सेंध

रांची। भारतीय जनता पार्टी ने द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति चुनाव में एनडीए का उम्मीदवार बनाकर बड़ा दांव चल दिया है, जिससे झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) की दुविधा भी बढ़ गई हैं।

विपक्ष के साझा उम्मीदवार के रूप में यशवंत सिन्हा को उतारने के लिए जेएमएम ने भी हस्ताक्षर किया था, लेकिन एनडीए की ओर से आदिवासी उम्मीदवार को उतारे जाने के बाद शिबू सोरेन की अगुआई वाली पार्टी अपना स्टैंड बदल सकती है। यदि द्रौपदी मुर्मू चुनाव जीतती हैं तो वह देश की पहली आदिवासी राष्ट्रपति होंगी।

झारखंड में कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार चला रही जेएमएम के वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि उनकी पार्टी मुर्मू का समर्थन कर सकती है।

दोनों परिवार में मधुरसंबंध

- जेएमएम के एक नेता ने कहा, 'दोनों परिवारों में घनिष्ठता है। ओडिशा के मयूरभंज जिले में सोरेन के कई पारिवारिक रिश्ते हैं, जहां से मुर्मू आती हैं। हमंत सोरेन की पत्नी सहित शिबू सोरेन की दो बहुएं इसी इलाके से हैं। हेमंत की बहन का विवाह भी उसी इलाके में हुआ है।

जेएमएम को छवि की चिंता

पार्टी के एक नेता ने कहा, 'जब समुदाय (आदिवासी) के लिए कुछ महत्वपूर्ण हो रहा है तो खुद को दूसरे पक्ष में देखना वैचारिक रूप से मुश्किल होगा। यद्यपि यशवंत सिन्हा भी झारखंड के नेता हैं, लेकिन मुर्मू को नजरअंदाज करना मुश्किल होगा, खासकर तब जब बीजेपी जैसे दल ने समर्थन देकर सिन्हा की जीत को और ज्यादा मुश्किल बना दिया है।

द्रौपदी मुर्मू ने मांगा था बीजेडी से समर्थन

नवीन पटनायक ने कहा- ओडिशा के लिए गर्व का क्षण है

नई दिल्ली। राष्ट्रपति चुनाव में बीजेपी की अगुवाई वाले एनडीए गठबंधन ने अपने उम्मीदवार का ऐलान कर दिया है. झारखंड की राज्यपाल रह चुकीं द्रौपदी मुर्मू एनडीए की चेहरा होंगी। नाम के ऐलान के बाद द्रौपदी मुर्मू ने सबसे पहले बीजेडी (बीजू जनता दल) से समर्थन की अपील की थी। अब इस पर बीजेडी चीफ नवीन पटनायक की प्रतिक्रिया आई है।

नवीन पटनायक ने कहा है कि द्रौपदी मुर्मू का ह्ष्ट के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में होना ओडिशा के लिए गर्व का क्षण है. जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मेरे साथ इस पर चर्चा की तो मुझे बहुत खुशी हुई. वो देश में महिला सशक्तिकरण के लिए एक उदाहरण स्थापित करेंगी. नवीन पटनायक का ये बयान द्रौपदी मुर्मू की अपील पर फाइनल मुहर माना जा रहा है।

बता दें कि द्रौपदी मुर्मू भी ओडिशा की ही रहने वाली हैं. ओडिशा के आदिवासी जिले मयूरभंज के रायरंगपुर गांव में जन्मी द्रौपदी मुर्मू ओडिशा की पहली महिला और आदिवासी नेता हैं, जिन्हें राज्यपाल नियुक्त किया गया. वो 18 मई 2015 से 12 जुलाई 2021 तक झारखंड के राज्यपाल पद पर रहीं. द्रौपदी मुर्मू देश की पहली आदिवासी महिला राज्यपाल हैं.

2013 में वो बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में एसटी मोर्चे की सदस्य रहीं. 10 अप्रैल 2015 तक उन्होंने यह पद संभाला था. वह 2013 में ओडिशा के मयूरभंज की जिला अध्यक्ष निर्वाचित हुईं थी. वह 2010 में भी जिला अध्यक्ष निर्वाचित हुई थीं।

देश में कोरोना के 12249 नए मामले, 81 हजार एक्टिव केस...

नई दिल्ली। भारत में कोरोना वायरस के केस तेजी से बढ़ने लगे हैं. पिछले 24 घंटे में कोरोना के 12249 केस सामने आए हैं. देश में एक्टिव केस बढ़कर 81 हजार से ज्यादा (81,687 केस) हो गए हैं. इतना ही नहीं पिछले 24 घंटे में कोरोना से 13 लोगों की मौत हुई है. इससे पहले 21 जून को देशभर में कोरोना के 9,923 केस सामने आए थे. इस दौरान 17 लोगों की मौत हुई थी. स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, देश में अब तक कोरोना के 4,33,31,645 केस सामने आ चुके हैं। जबकि 5,24,903 लोग इस महामारी से अपनी जान गंवा चुके हैं. देश में पिछले 24 घंटे में एक्टिव केस में 2374 केस का इजाफा हुआ है। दिल्ली से सटे नोएडा में कोरोना संक्रमितो रोगियो में लगातार हो रहे इजाफा स्वास्थ्य विभाग के चिंता का कारण बना हुआ है. पिछले 6 दिनों में कोरोना के सक्रिय मरीजों की संख्या में दो गुना बढ़ोतरी हुई है. यहां पिछले 24 घंटे कोरोना के 125 नए मरीज मिले हैं. एक्टिव केस भी बढ़कर 606 हो गए हैं. अभी 20 मरीजों का इलाज अस्पताल में चल रहा है. इससे पहले नोएडा में बीते 7 दिनों से जिले में हर रोज 100 से कम नए मरीज मिले थे. इससे पहले 20 जून को 99, 19 जून को 87, 18 जून को 90, और 17 जून को 95 नए मरीज मिले थे. वहीं 16 जून को मरीजों की संख्या 100 थी।

मूसेवाला की हत्या के बाद बराड़ की प्लानिंग, खुलासा होने पर पुलिस भी हैरान

पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला की हत्या करने के बाद लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ गिरोह को पंजाब के दविंदर बंबिहा गिरोह के शूटर की हत्या करनी थी। इसके लिए गोल्डी बराड़ ने शूटरों को निर्देश दे दिए थे। दूसरी तरफ पुलिस की जांच में ये बात सामने आई है कि सिद्धू मूसेवाला की हत्या के लिए विदेशी हथियारों का इस्तेमाल किया गया है। इनमें ज्यादातर चीन के हथियार हैं। इसके अलावा सिद्धू मूसेवाला की हत्या करने के लिए 27 मई को भी उसका कई किलोमीटर तक पीछा गया था। तब भी संदीप उर्फ केकड़ा ने शूटरों के लिए पंजाबी गायक की मुखबिरी की थी। स्पेशल सेल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि केंद्रीय एजेंसियों से सूचना मिली है कि लॉरेंस बिश्नोई-गोल्डी बराड़ व दविंदर सिंह बंबिहा गिरोह में जल्द ही गैंगवार होनी थी। लॉरेंस बिश्नोई-गोल्डी बराड़ गिरोह को बंबिहा गिरोह के शूटर चस्का की हत्या करनी थी। हत्या के लिए काफी निर्देश दे दिए गए थे।

सीएम के सलाहकार ने की नरवा, गरवा, घुरुवा अउ बाड़ी योजना की समीक्षा

गौठान का किया अवलोकन, समूह की महिलाओं से की बातचीत

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुंद।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के सलाहकार प्रदीप शर्मा ने सिरपुर भ्रमण एवं झलप गौठान का अवलोकन किया। समूह महिलाओं से बातचीत की उनकी निर्मित सामग्री देखी और सराहना की।

इससे पहले उन्होंने कलेक्टोरेट कार्यालय के सभाकक्ष में शासन की फ्लैगशिप योजना नरवा गरवा घुरुवा अउ बाड़ी के क्रियान्वयन की समीक्षा की। शर्मा ने गोबर खरीदी एवं वर्मी खाद निर्माण की भी समीक्षा की गई। उन्होंने कहा कि गोबर खरीदी प्राथमिकता है। गोबर की खरीदी नियमित होती रहे। गोबर खरीदी की जिम्मेदारी तय हो। उन्होंने पशुपालकों के कम पंजीयन पर चिन्ता जाहिर की। पशु चिकित्सा अधिकारी को 15 दिवस के भीतर पशुपालकों का प्रतिशत बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा ग्राम गौठान समिति को प्रेरित करें और उन्हें प्रशिक्षण दें। सलाहकार प्रदीप शर्मा ने कहा कि गौठान से जुड़े काम और बेहतर ढंग से करें। महासमुंद एक समृद्ध क्षेत्र है लिहाजा इसका लाभ भी योजनाआं और उनसे जुड़े हितग्राहियों को हासिल हो। उन्होंने कहा कि जो महिलाएं गौठान से जुड़ी है। वह सब्जी-भाजी लगाएं। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षित भी किया जाए। बारिश को देखते हुए गौठान में मवेशियों के स्वास्थ्य परीक्षण और उनका इलाज भी किया जाए। उन्होंने कहा कि गौठानों को रूरल इंडस्ट्रियल पार्क के रूप में विकसित करने के लिए वहां और अधिक आर्थिक गतिविधियां संचालित करने की आवश्यकता है। इससे ग्रामीण स्वावलंबन की राह में आगे बढ़ेंगे। उन्होंने अधिकारियों को गौठानों में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के क्रियान्वयन में निरंतरता लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह सरकार की सबसे महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है। ग्रामीण जनजीवन में आर्थिक परिवर्तन की इस योजना की प्रशंसा ना सिर्फ छत्तीसगढ़ में बल्कि पूरे देश मे हो रही है।

उन्होंने बताया कि समय-समय पर गोधन और एनजीजीबी के क्रियान्वयन के संबंध में अधिकारियों से फीडबैक लिया जाता है और योजनाओं को लागू करने में आ रही दिक्कतों की समीक्षा की जाती है। इसके अलावा भौगोलिक जटिलताओं के बीच इन योजनाओं को और कितना प्रभावी बनाया जा सकता है इस पर भी विचार किया जाता है। उन्होंने किसानों और ग्रामीणों से आगामी खरीफ फसलों को पशुओं की चराई से बचाने के लिए अगले माह आयोजित किए जा रहे रोका-छेका अभियान में सहयोग करने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि इससे खेतों की फसल भी बचेगी और गोधन न्याय योजना से होने वाला लाभ भी बढ़ेगा। कलेक्टर निलेशकुमार क्षीरसागर ने उनका स्वागत किया और जिले की नरवा, गरवा, घुरुवा अउ बाड़ी की प्रगति से अवगत कराया। साथ ही आगामी योजना के बारे में बताया। सीईओ जिला पंचायत एस आलोक ने गौठान में स्व सहायता समूह द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों की जानकारी दी।

बैठक में डीएफ ओ पंकज राजपूत, अपर कलेक्टरी ओपी कोसरिया, एसडीएम भागवत जायसवाल सहित विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारी एवं जिले के एसडीएम तथा जनपद सीईओ सहित ब्लॉक स्तरीय अधिकारी वर्चुअल जुड़े। शर्मा ने झलप में स्व सहायता समूह की महिलाओं से बातचीत की और हालचाल जाना। समूह को नियमित रूप से भागीदारी सुनिश्चित करने की बात कही। उनकी मांगों पर उचित कार्रवाई का भरोसा दिया। उन्होंने स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों और निर्मित सामग्री साबुन, कीटनाशक, दोना पत्तल, अगरबत्ती, मोमबत्ती निर्माण की सराहना की।

एक नजर

निहारिका श्रीवास्तव को पत्रकार कल्याण महासंघ में मिली अहम जिम्मेदारी

बनायी गई प्रदेश संयुक्त सचिव

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुन्द।

राजधानी रायपुर निवासी सक्रिय पत्रकार घूमतीदुनिया एवं निहारिका संदेश पत्रिका की प्रधान संपादक निहारिका श्रीवास्तव को पत्रकार संगठन में बड़ी जिम्मेदारी मिली है। यह जिम्मेदारी उनके सक्रियता को देखते हुए संगठन द्वारा उनको प्रदेश स्तर पर जिम्मेदारी सौंपी गयी है। बता दे कि नया पत्रकार संगठन पत्रकार कल्याण महासंघ छत्तीसगढ़ पूरे प्रदेश में अपना वर्चस्व बना रही है इसी कड़ी में संगठन के सरंक्षक आरबी वर्मा, प्रदेश अध्यक्ष सेवक दास दीवान एवं प्रदेश महासचिव सुनील कुमार यादव के दिशा निर्देश में निहारिका श्रीवास्तव को प्रदेश संयुक्त सचिव की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं नव नियुक्त प्रदेश संयुक्त सचिव निहारिका श्रीवास्तव ने संगठन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा किए उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई है उसमे वह पूरी जिम्मेदारी के साथ अपना काम करेंगी। साथ ही समूचे पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में अपने संगठन के पदाधिकारियों के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए सदस्यता अभियान चलाकर पत्रकार साथियों को एक जुट करने में अपना योगदान देंगी। उनके इस उपलब्धि पर प्रदेश अध्यक्ष सेवक दास दीवान प्रदेश महासचिव सुनील कुमार यादव प्रदेश उपाध्यक्ष इस्माइल खान प्रदेश उपाध्यक्ष शशांक दुबे प्रदेश उपाध्यक्ष गुलाब दीवान प्रदेश कोषाध्यक्ष प्रवीण खरे,प्रदेश सचिव कुलेश्वर सिन्हा प्रदेश संगठन सचिव सुधीर सोनी प्रदेश सह सचिव राजकुमार कुंदरा प्रदेश कार्यकारी सदस्य उत्तर कौशिक प्रदेश कार्यकारी सदस्य अजीत सिंह सहित सभी पदाधिकारियों ने बढ़ाई एवं शुभकामनाएं दी है।

बेमेतरा पुलिस द्वारा अवैध कारोबारियों के खिलाफ चलाया जा रहा अभियान के तहत आबकारी एक्ट के मामले में 174 पौवा देशी प्लेन शराब जप्त

जोहार छत्तीसगढ़-बेमेतरा।

पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अतिएपुलिस अधीक्षक बेमेतरा पंकज पटेल, अति.पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन के मार्गदर्शन में प्रतिदिन पूरे जिले में थाना। चौकी प्रभारियों के द्वारा अवैध शराब, जुआ, सट्टा, गांजा पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। जिसके तहत 21 जून 2022 को थाना नांदघाट पुलिस को जरिये मुखबीर से सूचना मिला कि ग्राम तेन्दुआ का अनिल वर्मा अपने घर की परछी में अवैध शराब रखकर, अवैध रूप से धन अर्जित करने की नियत से शराब बिक्री कर रहा है कि सूचना पर थाना नांदघाट स्टाफ गवाहो के साथ मौके पर पहुंचकर घेराबंदी कर पकडा गया। जिसमें 01 प्रकरण में 01 आरोपी अनिल वर्मा पिता चतुर वर्मा उम्र 22 साल साकिन तेन्दुआ थाना नांदघाट जिला बेमेतरा के कब्जे से 174 पौवा देशी प्लेन शराब 31,32 कीमती 13,920 रूपये को 34 ;2, आबकारी एक्ट के तहत जप्त कर कार्यावाही किया गया। उक्त कार्यवाही में थाना नांदघाट प्रभारी निरीक्षक संतोषी ग्रेस, सउनि शंकर लाल सोनवानी, सउनि अरविंद शर्मा, प्रधान आरक्षक रामेश्वर मांडले,आरक्षक विनोद पात्रे, इंद्रजीत पात्रे, रूपेन्द्र राजपूत, हीरालाल साहू, प्रताप यादव एवं अन्य स्टाफ की सराहनीय भुमिका रही।

शनिचरी में धारदार हथियार लेकर व्यापारियों को दी धमकी, आरोपी गिरफ्तार

बिलासपुर । शनिचरी बाजार में सोमवार की शाम एक युवक धारदार हथियार लेकर व्यापारियों को धमकी दे रहा था। उसके डर से व्यापारी अपनी दुकान छोड़कर भाग निकले। व्यापारियों की शिकायत पर पुलिस की टीम ने मौके पर दबिश देकर एक युवक को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से हथियार जब्त कर आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है।

कोतवाली पुलिस को सोमवार की शाम सूचना मिली कि एक युवक धारदार हथियार लेकर व्यापारियों को धमका रहा है। इससे डरकर व्यापारी अपनी दुकान छोड़कर भाग निकले। उन्होंने कोतवाली थाना पहुंचकर इसकी शिकायत की। शिकायत पर कोतवाली पुलिस की टीम ने मौके पर पहुंचकर करबला चौक रविदास मंदिर के पास रहने वाले अरमान खान को पकड़ लिया।

सिरपुर में स्कूली बच्चों संग आला अधिकारियों ने भी किया योगा

महासमुंद । पुरातत्व नगरी एवं पर्यटन स्थल सिरपुर के सुरंग टीला परिसर में आठवाँ योग दिवस का जिला स्तरीय कार्यक्रम हुआ। सैकड़ों स्कूली विद्यार्थियों संग जनप्रतिनिधि और जिला प्रशासन के आला अधिकारी सहित कर्मचारियों ने योगा किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला पंचायत के उपाध्यक्ष लक्ष्मण पटेल ने हिस्सा लिया।

कलेक्टर निलेशकुमार क्षीरसागर ने योग के फायदे बताए। उन्होंने कहा कि शरीर को चुस्त दुरूस्त और मन को शांत रखने के लिए अब दुनियाभर में काफी लोग योग का सहारा ले रहे हैं। उन्होंने कहा योग भारत की देन है। दुनियाभर में योग के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। आप सभी भी इसे नियमित तौर पर अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। पुलिस अधीक्षक विवेक शुक्ला ने कहा कि योग करने से शरीर निरोगी तो रहता ही है, शरीर में दिनभर ताजगी भी बनी रहती है। इसे आप दिनचर्या में शामिल करें और खुद को फीट रखें। जिला पंचायत उपाध्यक्ष लक्ष्मण पटेल ने भी बच्चों को योगा के हितकारी लाभ बताए। उन्होंने करबो योग रहिबो निरोग की बात कही। कार्यक्रम सबेरे 7 बजे से 8 बजे तक हुआ। कार्यक्रम के अंत में शामिल बच्चों को प्रशस्ति पत्र दिए गए। आज योगा को लेकर स्कूल बच्चों में खासा उत्साह था। सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

दिल्ली में बस्तर की बहार, लड़ेंगे जंग आर-पार

जगदलपुर। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी के समर्थन में वैसे तो देश भर के कांग्रेस सांसदों, विधायकों और नेताओं का दिल्ली में जमावड़ा लगा है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में मंत्री, विधायक, सत्ता से जुड़े पदाधिकारी तथा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम की अगुवाई में संगठन के तमाम नेता दिल्ली में डटे हुए हैं और अपने राष्ट्रीय नेता के समर्थन में सत्याग्रह कर रहे हैं। इस सत्याग्रह में खास बात यह है कि बस्तर की पूरी कांग्रेस बिरादरी दिल्ली मोर्चे पर तैनात है। बस्तर सांसद दीपक बैज यूं भी संसद से लेकर सड़क तक दिल्ली में अपने आक्रामक तेवर दिखाते रहते हैं, वे इस मौके पर पहले दिन से ही अपने राष्ट्रीय नेता के समर्थन में अपने नेता भूपेश बघेल के साथ सक्रिय हैं। बस्तर के बारह विधायक दिल्ली में बस्तर का जोश दिखा रहे हैं। राज्यसभा सांसद फूलोदेवी नेताम और पीसीसी चीफमोहन मरकाम भी बस्तर के ही हैं। दिल्ली पहुँचे बस्तर के नेताओं ने कल बसन्त कुंज में गिरफ्तारी थी।आज एआईसीसी जाने के लिए योजना बनी।बस्तर संभाग के सभी विधायक व संगठन के नेता भी मौजूद हैं और अपने राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी के पक्ष में लगातार केंद्र सरकार का विरोध कर रहे हैं।जब तक मामला खत्म नही किया जाता, तब तक दिल्ली में डेरा डालकर बस्तर के कांग्रेसी नेता आर पार की जंग लड़ेंगे।

जोरातराई की ईश्वरी बाई का फर्जीवाड़ा जांच में प्रमाणित

समिति के सदस्यों की फर्जी हस्ताक्षर से निकाली थी एक लाख रूपये

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुंद।

महिला अल्प बचत साख सहकारी समिति मर्यादित जोरातराई विकास खण्ड बागबाहरा की अध्यक्ष ईश्वरी बाई सबर के खिलाफ गंभीर आर्थिक अनियमितता मनमानी और लापरवाही को लेकर सदस्यों की शिकायत के बाद भी कार्यालय उप पंजीयक सहकारी संस्थाये महासमुंद द्वारा जांच करवाये जाने पर सभी 11 बिन्दुओं में आरोप प्रमाणित पाया गया है तथा समिति के संचालक मंडल को अध्यक्ष को पद से हटाये जाने छत्तीसगढ़ सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 की धारा 53 ख ;1, के प्रावधानों के अनुसार सुनवाई का अवसर देते हुये कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। जोरातराई की अल्प बचत सहकारी समिति के अध्यक्ष ईश्वरी बाई सबर के विरूध्द हुई शिकायत पर विकास खण्ड महासमुंद के सहकारी विस्तार अधिकारी अनीस कुमार दीवान द्वारा की गई जांच में पाया गया किए अध्यक्ष सबर द्वारा प्रबंध कारिणी समिति की बैठक का आयोजन नियमानुसार नहीं किया जाता। संस्था की वार्षिक आम सभा का भी आयोजन नही किया गया। समिति के बैंक खाते जो छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक बागबाहरा से संचालित है। जिसमे अध्यक्ष द्वारा प्रबंध कारिणी के सदस्यों की सहमति व अनुमोदन के बिना ही सचिव का नाम लता बाई निर्मलकर की जगह पुत्री बाई यादव का नाम अवैधानिक रूप से दर्ज करवा दिया गया है। इसी प्रकार समिति के बैंक खाते में बिहान योजना के अंतर्गत गठित समूहों का भी लेन.देन किया जाता है। तथा उक्त समूह के नाम से एक लाख रूपये का ऋण लेकर अपनी सहकारी समिति के खाते में जमा कराकर राशि का उपयोग मनमानी पूर्वक किया जाना पाया गया है। समिति के लेखा अभिलेखों का संधारण नही किया जाता तथा संस्था के रोकड़ बही व अन्य पंजी/दस्तावेजों का तारिख वार संधारण नहीं किया जाता है। प्रबंध कारिणी समिति व सदस्यों द्वारा बुलाई गई बैठक में भी अध्यक्ष सबर उपस्थित नहीं होती है। समिति के क्रिया क्लापों पर भी संतोषप्रद जवाब न देकर समिति द्वारा संचालित शासकीय उचित मूल्य की दुकान में नियम विरूध्द अपनी पुत्री जया सबर को विक्रेता के पद पर नियुक्त कर दी गई है। अहम बात यह है कि संस्था अध्यक्षसबर संस्था के सदस्यों से दुर्व्यवहार भी करती है। यही नहीं समिति द्वारा संचालित उचित मूल्य की दुकान से उपभोक्ताओं को नियमानुसार और निर्धारित दर सामाग्री आपूर्ति न करते हुये। केन्द्र शासन द्वारा माह अप्रैल से सितम्बर तक प्रति व्यक्ति 5 किलो राशन आबंटित करने का आदेश जारी किया गया था और प्रत्येक पीडीएस दुकान में नोटिस को चस्पा कर प्रति राशन कार्ड धारको को निर्धारित राशन आंबटित किया गया है। जिस पर ग्राम पंचायत अंवराडबरी में संचालित अल्प बचत सहकारी समिति की अध्यक्ष ईश्वरी बाई सबर एवं उनकी सुपुत्री कुण्जया सबर जिनको उचित मूल्य दुकान की विक्रेता बनाकर नियुक्त किया गया है। जिनके द्वारा प्रति राशन कार्ड धारियों को मई माह में अप्रैल और मई का एक साथ राशन आंबटित किया जाना था। उसमे प्रत्येक राशन कार्ड धारियों को नियमानुसार राशन आंबटित नही किया गया है। इस मामले की पुष्टि हेतु जोहार छत्तीसगढ की टीम के औचक निरिक्षण पर पाया गया है किए राशन नियमानुसार विक्रेता व समिति के अध्यक्ष द्वारा शासन की आदेश को अंदेखा करते हुये अपनी मनमर्जी से राशन आंबटित किया गया है। साथ शासकीय खुदरा मूल्य के अनुसार शक्कर जहां 17 रूपये प्रति किलो में देना है उस पर 20 रूपये प्रति किलों की दर से बेचा गया है। साथ ही प्रति राशन कार्ड धारकों से अधिक राशि की वसूली की जाती है। इसे लेकर भी समिति की सदस्याओं और ग्रामीणों में काफी आक्रोश व्याप्त है। जांचकर्ता से प्रतिवेदन मिलने के बाद अल्प बचत सहकारी समिति जोरा तराई के संचालक मंडल को सहकारी संस्थाएं महासमुंद के उप पंजीयक द्वारा निर्देशित किया गया है किए छग सहकारी सोसायटी अधिनियम 1960 की धारा 53 ख ;1, प्रावधानों के अनुसार दोषी समिति अध्यक्ष ईश्वरी बाई सबर को पद से हटाने की कार्यवाही की जाये। इसके पूर्व उन्हे 11 बिन्दुओं के आरोप पत्र की सूची उपलब्ध कराकर मंडल की बैठक में सुनवाई का अवसर दिया जाये।

जिन क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है, वहां ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन करें प्रारंभ

जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक में कलेक्टर विनीत नंदनवार ने बैंक प्रबंधकों को दिए निर्देश

जोहार छत्तीसगढ़-सुकमा।

संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर विनीत नंदनवार ने जिले में संचालित सभी बैंक द्वारा किए जा रहे लेन-देन बैंकों में प्रस्तुत ऋण प्रकरण एवं उनकी स्वीकृति तथा जिले में बैंकिंग सुविधाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा की जिले में बैंकिंग सुविधा के विस्तार के लिए जिन क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा सुचारू रूप से पहुंच चुकी है। वहां सभी बैंक अपनी ग्राहक सेवा केंद्र खोले। इससे ग्रामीण बैंकिंग सुविधाओं का लाभ आसानी से उठा पाएंगे। ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से अंदरूनी क्षेत्र के ग्रामीण जिनका बैंक खाता नहीं है। वे खाता खुलवा सकेंगे। जिससे उन्हें मनरेगा मजदूरी, पेंशन, तेंदुपत्ता पारिश्रमिक भुगतान सीधे उनके बैंक खाते में मिलेंगे। ग्रामीण अधिक संख्या में शासन की योजनाओं से जुड़ेंगे और लाभ ले सकेंगे। इसके लिए उन्हें बैंक शाखा तक आने की परेशानी का सामना नही करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि सुकमा में बैंकिंग सुविधाओं के विस्तार के किए टीम भावना से कार्य करना आवश्यक है। उन्होंने बैंको में प्रस्तुत ऋण प्रकरणों की स्वीकृति में आ रही समस्याओं के बारे ने जानकारी ली और कहा कि संबंधित विभाग और बैंक प्रतिनिधि के साथ समन्वय स्थापित कर शीघ्र ही निराकरण करे। बैठक में जन धन खाता, मुद्रा लोन, एनआरएलएम समूहों को प्रदाय तपद आदि की समीक्षा हुई। बैठक में जिला पंचायत सीईओ डीएन कश्यप, लीड बैंक आफिसर सहित विभिन्न बैंक प्रबंधक एवं बैंक प्रतिनिधि मौजूद रहे।

लाखों की गड़बड़ी पर आईएएस सुधाकर खलखो के खिलाफ हाई कोर्ट का निर्देश, शासन और ईओडब्ल्यू पेश करे जवाब

किसान मजदूर संघ के ललित चंद्रनाहू ने उच्च न्यायालय में दाखिल की थी याचिका

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुन्द।

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड एवं माटीकला बोर्ड के प्रबंध संचालक सुधाकर खलखो के विरूद्ध शासन और ईओडब्ल्यू को जवाब प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड एवं माटीकला बोर्ड के विरूद्ध वित्तीय अनियमितताओं का समाचार प्रकाशित होने पर ग्रामोद्योग विभाग द्वारा वित्तीय अनियमितताओं की जांच के लिए भुवनेश यादव आईएएस, विशेष सचिव ग्रामोद्योग विभाग की अध्यक्षता में 19 अगस्त 2021 को एक त्रि-सदस्यीय जांच दल का गठन किया गया था। जांच दल द्वारा जांच के दौरान वित्तीय अनियमितताओं के अनेक गंभीर तथ्यों को छिपाते हुए 7 पृष्ठीय जांच प्रतिवेदन 55 प्रासंगिक सहपत्रों सहित प्रस्तुत किया गया। जांच प्रतिवेदन के अनुसार छत्तीसगढ़ विकास बोर्ड एवं माटीकला बोर्ड के प्रबंध संचालक सुधाकर खलखो आईएएस, को 20 लाख रुपए की फोटोग्राफी नियम विरूद्ध कराए जाने, फोटोग्राफी कराए जाने के बाद अपने कार्यालय में ही 11.75 लाख रुपए में स्टूडियो का निर्माण कराने में शासकीय नियमों का पालन नहीं कराए जाने, अनेक वाहनों की खरीदी बिना अनुमति और आबंटन प्राप्त किए अन्य मदों से करने तथा गुजरात की संस्था को पीपीपी पब्लिक, प्राइवेट पार्टनरशिप, मोड पर संचालन का निर्णय स्वत: लेकर बोर्ड को हानि पहुंचाए जाने का उल्लेख है। उक्त मोड से व्यवसाय किए जाने के कारण बोर्ड को वर्ष 2020 और 2021 में माह जुलाई तक मात्र 62,980 रुपए की आमदनी हुई। जबकि किराया आदि में 32ए72ए439 रुपए व्यय किया गया है। नियमानुसार पीपीपी मोड पर व्यवसाय करने का निर्णय संचालक मंडल द्वारा लिया जाना था।

जांच दल द्वारा जांच प्रतिवेदन ग्रामोद्योग विभाग में प्रस्तुत किए जाने के बाद ग्रामोद्योग विभाग द्वारा जांच प्रतिवेदन सामान्य प्रशासन विभाग को आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजा गयाए क्योंकि सुधाकर खलखो आईएएस कैडर के अधिकारी हैं और उनके विरूद्ध कार्रवाई करने के लिए सामान्य प्रशासन विभाग ही सक्षम प्राधिकारी हैं। परए जांच प्रतिवेदन प्राप्त होने के बाद भी सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा खलखो के विरूद्ध कार्रवाई नहीं की गई। प्रबंध संचालक खलखो के विरूद्ध तैयार किए गए जांच प्रतिवेदन की प्रति सूचना के अधिकार तहत प्राप्त कर किसान मजदूर संघ छत्तीसगढ़ के संयोजक ललित चन्द्रनाहू द्वारा राज्य आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो, रायपुर में शिकायत पत्र जनवरी 2022 में प्रस्तुत कर आपराधिक प्रकरण दर्ज कराए जाने का अनुरोध किया गया। लेकिन प्रकरण दर्ज नहीं किए जाने पर मार्च 2022 में मुख्य सचिव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, गृह विभाग, सचिव-सामान्य प्रशासन विभाग और पुलिस महानिदेशक को पत्र प्रेषित कर प्रबंध संचालक के विरूद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज करने हेतु उक्त ब्यूरो को निर्देशित करने का निवेदन किया गया। लेकिन किसी तरह का सकारात्मक परिणाम सामने नहीं आने पर शिकायतकर्ता चन्द्रनाहू द्वारा प्रबंध संचालक के विरूद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज करने आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो को निर्देशित किए जाने बाबत् याचिका अपने अधिवक्ता अनुजा शर्मा के माध्यम से प्रस्तुत की गई, जिस पर उच्च न्यायालय द्वारा शासन और ईओडब्ल्यू को जवाब प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया है।

एक तरफ कही जर्जर भवन गिर न जाये की डर से पहली से पांचवीं तक की पढ़ाई चल रही एक ही कक्षा में

आंख में कम दिखाई देने के कारण छात्रों की पढ़ाने के लिए विभाग से बाहर के अन्य टीचर को ला रहे हेड मास्टर

जोहार छत्तीसगढ़-कोतबा।

जशपुर जिले में फ रसाबहार ब्लॉक के शासकीय प्राथमिक शाला बरटोली मे भवन की स्थिति अत्यंत जर्जर हो गई है। भवन लगभग खंडहर होने की स्थिति में पहुंच चुका है। वह कभी भी गिर सकता है और गंभीर हादसा हो सकता है।

बारिश के मौसम में जर्जर स्कूल भवनों में बैठकर शिक्षा अर्जित कर रहे विद्यार्थियों को परेशानी होती है। कहीं बारिश में छत से पानी टपकता है तो कहीं भवन के नीचे का प्लास्टर उखड़ने से गड्ढे हो गए हैं। इसी परेशानी के बीच ही विद्यार्थियों को पढ़ाई करनी पड़ रही है इसी परेशानी को देखते हुए सभी पहली से पांचवीं तक के विद्यार्थियों को एक ही कक्षा में बैठकर पढ़ाई करना पड़ रहा है ना ही स्कूल में टाइलेट जाने कि व्यवस्था है और ना ही बाउंड्री वॉल है मुत्रालय तो मानो खंडहर बन चूका है वहा के एच एम सामएल कुजूर का कहना है कि स्कुल भवन लगभग पच्चीस साल पुराना है स्कुल भवन का छत काफी कमजोर हो चूका है बच्चों को वहा बैठाने में भी डर लगता है। जिसके कारण हमें बच्चों को एक साथ बैठना पड़ता है। और जिस कक्षा में बैठाया जा रहा है उस कक्षा में भी बारिश होने पर पुरे छत से पानी निचे टपकता है जिसके कारण इस भवन में भी छात्रों को नहीं बैठाया जा सकता है बारिश के दिनों में स्थिति अत्यंत दयनीय रहती है। हेड मास्टर का यह भी कहना है कि लगभग डेढ़ दो सालों से छत से सीमेंट की परत गिर रहा है । जब हेड मास्टर सामएल कजूर से पूछा गया कि भवन के जंजर होने की सूचना आपने किसी अधिकारी को दिया या नहीं, तब उनका कहना है कि पिछले सत्र के मार्च-अप्रैल में हमने विभागीय सूचना बीईओ ऑफिस व संकुल समन्वयक को दी थी। परंतु अभी तक भवन की स्थिति ठीक नहीं हो पाई है हेड मास्टर सामएल कुजूर अपनी आंखों से भी स्पष्ट नहीं देख पाते हैं इसलिए विभाग के बाहर से अन्य व्यक्ति को छात्रों की पढ़ाने के लिए लाया जा रहा है कई महीनों से उनकी आंखों का इलाज चल रहा है यह भी छात्रों के लिए एक दिक्कत की बात है अगर शिक्षक की आंखें स्पष्ट नहीं दिख रही तो छात्रों के पढ़ाई का क्या होगा। एक ओर पिछले दो सालों से जर्जर भवन के कारण विद्यार्थियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर हेड मास्टर की आंखों से स्पष्ट दिखाई ना पढ़ना भी कहीं ना कहीं छात्रों के भविष्य के लिए दिक्कत की बात है।

जोहार छत्तीसगढ़ विशेष खबर

एक नजर

शासकीय आईटीआई बेमेतरा में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित

जोहार छत्तीसगढ़-बेमेतरा।

छग शासन कौशल विकास विभाग के अंतर्गत संचालनालय रोजगार एवं प्रशिक्षण छग रायपुर के अधीन शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, बेमेतरा में सत्र 2022-23 एवं 2022-24 में प्रवेश हेतु आवेदकों से व्यवसाय विद्युतकार, कम्प्यूटर आपरेटर एंड प्रोग्रामिंग असिस्टेंट एवं मेकेनिक डीजल के लिये ऑनलाइन पंजीयन संचालनालय, रोजगार एवं प्रशिक्षण के वेबसाइट के ऑनलाइन एप्लीकेशन 2022 पर क्लिक कर आनलाइन आवेदन 02 जुलाई 2022 तक कर सकते हैं। रजिष्टेऋशन के पूर्व प्रशिक्षण विवरणिका जो कि वेबसाईट पर उपलब्ध है। जिसमें प्रवेश हेतु शासकीय आईटीआई का नाम, व्यवसायवार सीटों की संख्या एवं शैक्षणिक योग्यता की जानकारी प्रदर्शित है। उसे डाउनलोड कर आवेदक सावधानी पूर्वक अध्ययन कर ऑनलाइन आवेदन करना है। आवेदक की आयु 01 अगस्त 2022 को 14 वर्ष से कम नहीं होना चाहिये। उच्चतम आयु सीमा का बंधन नहीं है। आवेदक का चयन होने पर एसएमएस के माध्यम से सूचना भेजी जावेगी। अत: आवेदक अपना सही एवं चालू स्थिति में मोबाइल नं. अवश्य दर्शावे। इस संबंध में विस्तृत जानकारी बेमेतरा के कोबिया चौक स्थित आईटीआई संस्था से कार्यालयीन समय में प्राप्त की जा सकती है।

आवासीय खेल अकादमी बिलासपुर हेतु जिला स्तरीय चयन ट्रायल 29 को

एथलेटिक्स बालक-बालिका एवं कबड्डी बालिका का चयन ट्रायल रणजीता स्टेडियम में प्रात: 8 बजे से होगा

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा राज्य खेल प्रशिक्षण केंद्र, बहतराई बिलासपुर में एथलेटिक्स बालक.बालिका एवं कबड्डी बालिका खिलाड़ियों के लिए आवासीय खेल अकादमी प्रारंभ की जा रही है। जिसमें चयनित खिलाड़ियों को नि:शुल्क आवास, भोजन, शैक्षणिक व्यय, खेल परिधान, प्लेइंग किट, दुर्घटना बीमा आदि सुविधाएं शासन द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। जिसके लिए जिला स्तरीय चयन ट्रायल का आयोजन किया जाना है। खेल अधिकारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार चयन ट्रायल में प्रतिभागियों का बैटरी टेस्ट एवं खेल के आधार पर कौशल टेस्ट लिया जायेगा। जिला स्तरीय चयन ट्रायल में उपस्थित खिलाड़ियों में से एथलेटिक्स में 06 बालक एवं 06 बालिका जिनका आयु 13 से 17 वर्ष के मध्य हो तथा कबड्डी में ऐसे खिलाड़ी जिन्होने 01 अप्रैल 2022 को 13 वर्ष पूर्ण कर लिया हो किंतु 14 वर्ष से अधिक न हो में से 03 बालिका, 01 अप्रैल 2022 को 15 वर्ष पूर्ण कर लिया हो किंतु 16 वर्ष से अधिक न हो में से 05 बालिका एवं 01 अप्रैल 2022 को 16 वर्ष पूर्ण कर लिया हो किंतु 17 वर्ष से अधिक न हो में से 05 बालिका कबड्डी खिलाड़ी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों का चयन कर राज्य स्तरीय चयन ट्रायल में भेजा जायेगा। जिले के ऐसे एथलेटिक्स बालक.बालिका एवं कबड्डी बालिका खिलाड़ी राज्य स्तरीय खेल अकादमी में जाने की इच्छुक हो जिला स्तरीय चयन ट्रायल 29 जून 2022 को रणजीता स्टेडियम जशपुर में अंकसूची एवं आधारकार्ड की छायाप्रति के साथ प्रात: 08ण्00 बजे तक उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे।

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से अलग-अलग दो जगहों पर दो की मौत, दो गंभीर

जोहार छत्तीसगढ़-सीतापुर।

सीतापुर में अलग-अलग दो जगहों पर आकाशीय बिजली गिरने से दो लोगों की मौत हो गई है वही दो लोग गंभीर रूप से झुलस गए हैं। आपको बता दें कतकालो निवासी सोनमतिया 55 वर्ष जिसकी आकाशीय बिजली की चपेट में आ जाने से उसकी मौका स्थल पर ही मौत हो गई। वही सीतापुर से लगे सूर चौक के पास एनएससी 43 मेन रोड में राजनाथ तिर्की निवासी बालाझार अपने बच्चों का स्कूल में एडमिशन करा कर अपने बच्चों के साथ अपनी मोटरसाइकिल से

घर की ओर जा रहा था तभी आकाशीय बिजली की चपेट में आ जाने से एक ही परिवार के तीन लोग पिता व दो बच्चे आकाशीय बिजली की चपेट में आ गये। जिसमें पिता राजनाथ तिर्की की घटनास्थल पर ही मौत हो गई व दोनों बच्चे बुरी तरह झुलस गए। जिन्हें स्थानीय लोगों व एंबुलेंस की सहायता से सीतापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया जहां उनका इलाज किया जा रहा है जिसमें से छोटी बच्ची गंभीर रूप से झुलस गई है जिसे अंबिकापुर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। जब हमने, डॉक्टर निशा गुप्ता से बात की तो उन्होंने बताया की आज आकाशीय बिजली की चपेट में आए एक ही परिवार के तीन लोगों को सीतापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया। जिसमें से राजनाथ तिर्की 35 वर्ष निवासी कुड़ापानी बालाझार जिसकी मौत हो चुकी थी उनके दो बच्चे निर्मला 14 वर्ष व राधा 5 वर्ष को सीतापुर स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है जिनका इलाज चल रहा है बड़ी बच्ची निर्मला ठीक है जबकि राधा की शरीर में अधिक झुलस लगने के कारण उसे जिला अस्पताल अंबिकापुर रिफर किया जा रहा है।

राज्य गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष ने किया सोनपुरी में संचालित गौशाला का अवलोकन

महासमुंद । छत्तीसगढ़ राज्य गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष महंत रामसुंदर दास सोमवार को जिले के सरायपाली ब्लॉक के ग्राम सोनपुरी में संचालित मां भगवती बहुउद्देशीय गोशाला के अवलोकन किया। कहा नरुवा, गरुवा, घुरुवा, बारी का सर्वाधिक काम महासमुंद जिले में ही हुआ है। बता दें कि यह गौशाला अत्यंत दुर्गम स्थान पर पहाड़ों व नालों से घिरा हुआ है, जहां छायादार व फ्लदार वृक्ष सघन रूप से लगाए गए हैं। संचालन समिति ने आवागमन के लिए बरसाती नाले में पुल निर्माण की मांग महंत रामसुंदर दास से की। इस दौरान गो सेवा आयोग अध्यक्ष ने कहा कि जब से छत्तीसगढ़ राज्य में भूपेश बघेल की सरकार बनी है तब से गौ सेवा के क्षेत्र में सुधार हुआ है। यह क्रम अभी भी जारी है। गौ सेवा आयोग द्वारा पूर्ववर्ती सरकार में पंजीयन के कार्य में आने वाली कठिनाइयों को भी सरल किया है। उन्होंने पशुपालकों और ग्रामीणों से कहा कि आप दुर्गम क्षेत्र में गौ माता की सेवा कर रहे हैं आने वाले समय में शीघ्रतापूर्वक आपके इस गौशाला का पंजीयन किया जाएगा। बरसाती नाले में पुलिया निर्माण की मांग संबंधित विभाग के समक्ष रखूंगा, ताकि आप और मवेशियों को आने-जाने में किसी भी तरह की तकलीफ का सामना करना ना पड़े।

एनसीसी कैडेटों ने मनाया योग दिवस

महासमुंद । शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के सभागार में विश्व योग दिवस एनसीसी कैडेटों के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम महाविद्यालय एवं स्कूल के एनसीसी कैडेटों ने जीवन में योग को अपनाने की शपथ ली। एनसीसी अधिकारी प्रदीप कन्हेर एवं चमन चन्द्राकर तथा योग शिक्षक भेषलाल ठाकुर के मार्गदर्शन में प्रात: 7 बजे से 7.35 तक योग की विभिन्न मुद्रा जिसमे प्राणायाम, ब्रजासन, शवासन, शशांक आसन, ताड़ासन, भुजंगआसन, तितली आसन, पवन मुक्तासन, मक्रासन आदि योग की क्रिया कुल 70 कैडेटों को करायी गई और प्रत्येक योग के लाभ के बारे में एनसीसी कैडेटों को बताया गया।

राज्य महिला आयोग ने सुनवाई के दौरान महिलाओं के मानव तस्करी रोकथाम

अन्य हितधारकों तथा पीड़ितों के पूर्नवास विषयों पर की चर्चा

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

राष्ट्रीय महिला आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग के द्वारा छत्तीसगढ़ के समस्त जिलों में मानव तस्करी रोकथाम, अन्य हितधारकों तथा पीड़ितों के पूर्नवास से संबंधित प्रशिक्षण का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग, मानव तस्करी रोकथाम, अन्य हितधारकों तथा पीड़ितों के पूर्नवास विषय पर जिला जशपुर में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यशाला में जिले के जिला

संरक्षण अधिकारी, नवा बिहान के अधिकारी, मानव तस्करी रोकथाम पर कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता तथा जिले के पुलिस विभाग के अधिकारी कार्यशाला में उपस्थित थे। इस कार्यशाला में आधुनिकीकरण, आर्थिक विकास, पलायन एवं अन्य नवीन परिदृश्य में मानव तस्करी विशेषकर महिलाओं के मानव तस्करी रोकथाम, अन्य हितधारकों तथा पीड़ितों के पूनर्वास विषय पर परिचर्चा की गयी तथा एक राष्ट्रीय नीति तैयार करने पर विचार किया गया। मौजूदा कानून तथा नए लागू हुए कानून के क्रियान्वयन एवं प्रभाव तथा आवश्यक संशोधन पर भी परिचर्चा की गयी। प्रत्येक जिले में मानव व्यापार की रोकथाम हेतु निर्मित सेल की जानकारी दी गयी। साथ ही राज्य में विभिन्न शिविर के आयोजन के माध्यम से मानव तस्करी की रोकथाम, अन्य हितधारकों तथा पीड़ितों के पूनर्वास हेतु प्रचार-प्रसार एवं अन्य प्रयासो से अवगत कराया गया है। यदि कोई पीड़ित हैं तो वे छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग के व्हाट्सएप कॉल सेंटर नम्बर 9098382225 पर सम्पर्क कर या सम्बंधित जिले के महिला बाल विकास विभाग के अधिकारियों से अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

नगर पंचायत नवागढ़ में हुआ व्यवस्थापन शिविर,कलेक्टर ने किया शिविर का मुआयना

जोहार छत्तीसगढ़-बेमेतरा।

जोहर छत्तीसगढ़-बेमेतरा। राज्य शासन के योजनांतर्गत प्रभारी सचिव एवं कलेक्टर के मार्गदर्शन में नगर पंचायत नवागढ़ में बुधवार को शासकीय भूमि के आबंटन, अतिक्रमण, व्यवस्थापन, रियायती एवं गैर रियायती पट्टों को भूमि हक प्रदान किये जाने हेतु राजस्व शिविर का आयोजन किया गया। कलेक्टर विलास भोसकर संदीपान ने नवागढ़ का दौरा कर शिविर का मुआयना किया। शिविर में नगर पालिका प्रशासन, राजस्व विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे। शिविर के संबंध में नगर पालिका के द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। शिविर में फ्री होल्ड हेतु 15 आवेदन प्राप्त, राजीव गांधी आश्रय योजना पट्टा के लिए कुल 81 आवेदन प्राप्त हुए। प्राप्त आवेदनों के परीक्षण स्थल निरीक्षण बाद आबंटन व्यवस्थापन के संबंध में नियमानुसार कार्यवाही की जावेगी। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष तिलक घोषए अपर कलेक्टर डॉ. अनिल बाजपेयी, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व प्रवीण तिवारी, तहसीलदार नवागढ़ के.आर. वासनिक, मुख्य नगर पालिका अधिकारी डीएल बर्मन, नायब तहसीलदार चंद्रशेखर चंद्राकर, ऐल्डरमेन रुप प्रकाश यादव एवं अमित कुमार जैन राजस्व निरीक्षक सहित संबंधित क्षेत्र के पटवारीगण उपस्थित थे।

सफलता की कहानी

कम्युनिटी फेंसिंग योजना का लाभ लेकर फल सब्जी की अच्छी पैदावार कर रहें -केदारनाथ यादव

उद्यान विभाग की राज्य पोषित योजना का मिला लाभ

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

उद्यान विभाग के अंतर्गत संचालित राज्य पोषित योजना के तहत् जिले के किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। योजना का लाभ लेने वाले लाभान्वित किसान दुलदुला विकासखंड के ग्राम ग्राम डंडाडीह निवासी केदारनाथ राम यादव पिता वासुदेव यादव ने बताया कि क्यूनिटी फेंसिंग योजना के तहत् कुल रकबा 7.367, फेंसिंग रकबा 0.800 का 50 प्रतिशत विभागीय अनुदान के रूप में लाभ मिला है। उन्होंने छत्तीसगढ़ शासन और जिला प्रशासन को धन्यवाद देते हुए बताया कि वे उद्यानिकी फसलों लगाते हैं और उनके द्वारा अपने खेत में विभिन्न प्रकार फ ल, सब्जियों का उत्पादन किया जाता

है, पूर्व में अपने खेतों में लगी फ ल सब्जी, फसल को पशुओं द्वारा काफी नुकसान किया जाता था। उन्हें अपने खेतों की सुरक्षा में काफी परेशानियां होती थी। उद्यान विभाग से संपर्क करने पर उन्हें कम्युनिटी फेंसिंग योजना की जानकारी मिली और तार की जाली से अपने खेतों की सुरक्षा के लिए बाउंड्री लगाई गई। उद्यान विभाग ने 50 प्रतिशत राशि अनुदान के रूप में दिया। यादव ने बताया कि कम्यूनिटी फेंसिंग योजना का लाभ लेने के बाद अब उनके खेतों की सुरक्षा हो गई है साथ ही पशुओं से उनके सब्जी को किसी प्रकार हानि नहीं पहुँचती है। जिससे फ्ल सब्जी की पैदावार भी अच्छी होती है। उन्होंने इसके लिए छत्तीसगढ़ शासन और जिला प्रशासन को धन्यवाद दिया है।

पंजीकृत श्रमिकों के प्रथम दो बच्चों के प्रसव हेतु मिलेगी 20-20 हजार रूपये की प्रोत्साहन राशि

जोहार छत्तीसगढ़-बेमेतरा।

श्रम विभाग के अंतर्गत छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल द्वारा संचालित मिनीमाता महतारी जतन योजना में पंजीकृत निर्माणी महिला हितग्राहियों को प्रथम दो बच्चों के जन्म के बाद एक मुश्त 20 हजार रूपये दिये जाने का प्रावधान है। यह योजना पूर्व में संचालित भगिनी प्रसूति सहायता योजना का परिवर्तित नाम है। जिसमें पूर्व में 10 हजार रूपये दिये जाने का प्रावधान था। इस योजना में निर्माण श्रमिक के रूप में मंडल में 90 दिन पूर्व पंजीयन होना अनिवार्य है। बच्चे के जन्म पश्चात् 3 माह तक आवेदन करने का प्रावधान है। जिसमें बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र, जच्चा-बच्चा कार्ड, बैक खाता, श्रमिक पंजीयन कार्ड एवं हितग्राही द्वारा स्वयं का दिये गये स्वघोषणा प्रमाण पत्र के साथ निकटतम च्चाईस सेंटर या श्रम विभाग से आवेदन कर सकते है। ऑनलाईन आवेदन में सभी मूल दस्तावेज स्कैन कर अपलोड करना अनिवार्य है।

श्रम पदाधिकारी ने बताया कि जिला बेमेतरा में निर्माणी श्रमिकों के लिए संचालित मिनीमाता महतारी जतन योजना में पूर्व वित्तीय वर्ष 2021-22 में कुल 420 हितग्राहियों को राशि 29,05,000 उनतीस लाख पांच हजार रूपये, की सहायता राशि से लाभान्वित किया गया था। तथा वर्तमान वित्तीय वर्ष 2022-23 में अब तक कुल 73 हितग्राहियों को राशि 13,60,000 तेरह लाख साठ हजार रूपये की सहायता राशि प्रदाय किया जा चुका है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मंडल में संचालित प्रसूति सहायता योजना में पूर्व वित्तीय वर्ष 2021-22 में कुल 209 हितग्राहियों को राशि 20,90,000 बीस लाख नब्बे हजार रूपये की सहायता राशि से लाभान्वित किया गया थाए तथा वर्तमान वित्तीय वर्ष 2022-23 में अब तक कुल 149 हितग्राहियों को राशि 29,80,000 उनतीस लाख अस्सी हजार रूपये की सहायता राशि प्रदाय किया जा चुका है। इस प्रकार दोनों मंडल में पंजीकृत 629 हितग्राहियों को पूर्व वित्तीय वर्ष में 49 लाख 95 हजार एवं वर्तमान वित्तीय वर्ष में अब तक 222 हितग्राहियों को 43 लाख 40 हजार की सहायता राशि प्रदाय किया गया।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक -**नारायण बाईन,** फोन -फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in